क्रिया - प्रकार, क्रिया में रूपांतर के आधार

क्रिया का अर्थ होता है कार्य करना। किसी वाक्य में प्रयुक्त वह शब्द जिसके द्वारा किसी काम का करना या होना पाया जाता है उसे क्रिया कहते हैं। क्रिया के बिना वाक्य पूर्ण नहीं हो सकते। क्रिया विकारी शब्द है क्योंकि किसी वाक्य में लिंग, वचन, काल, वाच्य आदि के आधार पर क्रिया का रूप बदलता है। क्रिया का अर्थ होता है 'कार्य करना।'

उदाहरण -

मनोज पत्र लिखता है।
मनाली गीत गाती है।
मयूरी नृत्य कर रही है।
हर्ष पढ़ाई करता है।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रमशः लिखता है, गाती है, कर रही है, करता है ये क्रियापद है।

संस्कृत में क्रिया रूप को धातु कहते है। हिंदी में इन धातुओं के साथ 'ना' लगता है जैसे - पी+ना = पीना, लिख+ना = लिखना, पढ़+ना = पढ़ना

क्रिया के सामान्यतः निम्न भेद होते है -- कर्म के आधारपर, बनावट के आधारपर, व्यवहार के आधारपर इसके अलावा काल के आधारपर भी क्रिया के प्रकार होते है।

क्रिया

- कर्म के आधारपर
  - अकर्मक क्रिया
    - अपूर्ण अकर्मक
  - सकर्मक क्रिया
    - अपूर्ण सकर्मक
- बनावट के आधारपर
  - मूल/मुख्य
  - यौगिक
    - प्रेरणार्थक
    - संयुक्त
    - पूर्वकालिक
    - नामधातुक
- व्यवहार/अर्थ के आधारपर
  - संभावनार्थक
  - संदेहार्थक
  - संकेतार्थक
  - आज्ञार्थक
  - विधानार्थक
  - निषेधार्थक
  - प्रश्नार्थक
  - इच्छार्थक
  - विस्मयार्थक
- काल के आधारपर
  - भूतकालिक क्रिया
  - वर्तमानकालिक
  - भविष्यकालीन

by Dr. Sangita Chitrakoti

कर्म के आधारपर

सकर्मक क्रिया :-- इसमें कर्म प्रधान होता है। वाक्य में क्रिया के साथ कर्म का होना सकर्मक क्रिया कहलाती है। जिन क्रियाओं के व्यापार का फल कर्तापर न पड़कर कर्म पर पड़ता है। उन क्रियाओं को सकर्मक क्रिया कहते है।

जैसे - सीता गाना गाती है।

राम पुस्तक पढ़ता है।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रिया 'गाती' 'पढ़ता' का फल 'गाना' और 'पुस्तक' पर पड़ रहा है। अतः ये सकर्मक क्रियाएँ है।

विशेष – सकर्मक क्रिया का अर्थ कर्म सहित होना। जिस वाक्य में क्या, किसे प्रश्न का उत्तर मिल जाता है उसकी क्रियाएँ सकर्मक होती है।

' सीता गाना गाती है' इस वाक्य में सीता 'क्या' गाती है? इस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है। अतः उसकी क्रिया सकर्मक है।

भेद –

अपूर्ण सकर्मक क्रिया – जिस सकर्मक क्रिया के साथ एक कर्म आने पर भी कभी-कभी अर्थ पूरा नहीं होता है उसे अपूर्ण सकर्मक क्रिया कहते हैं। उसकी पूर्ति के लिए किसी अन्य शब्द का सहारा लेना पड़ता है उसे कर्मपूरक कहते हैं।

जैसे – गांधी जी ने भारत को दिलाई।

इस वाक्य में 'दिलाई' अपूर्ण सकर्मक क्रिया है। क्रिया 'दिलाई' के पहले स्वतंत्रता शब्द जोड़ने से वाक्य का अर्थ पूरा हो जाता है। अतः स्वतंत्रता कर्मपूरक है।

जैसे – गांधीजी ने भारत को स्वतंत्रता दिलाई।

यहाँ वाक्य का अर्थ स्पष्ट होता है। अपूर्ण सकर्मक को द्विकर्मक क्रिया भी कहा जाता है।

द्विकर्मक क्रिया-- जब वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म प्रयुक्त हो तो उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे – गांधीजी ने भारत को स्वतंत्रता दिलाई।

इस वाक्य में भारत और स्वतंत्रता दोनों कर्म है।

विशेष – 1) द्विकर्मक क्रिया के दो कर्मों में से प्रथम कर्म प्रधान कर्म कहलाता है और द्वितीय कर्म गौण कहलाता है।

2) ' क्या' प्रश्न पूछने पर गौण कर्म का उत्तर मिलता है।

3) 'किसे' प्रश्न पूछने पर प्रधान कर्म का उत्तर मिलता है।

अकर्मक क्रिया– वे क्रियाएं जिनके साथ कर्म प्रयुक्त नहीं होता उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जिन क्रियाओं से होनेवाले कार्य या व्यापार का फल कर्ता पर पड़ता है। उन्हें अकर्मक क्रिया कहते है।

जैसे -- राम बैठा

तुम दौड़ते हो।

वह आया।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रिया बैठा, दौड़ते हो, आया का फल कर्ता 'राम', 'तुम', 'वह' पर पड़ रहा है।

यहाँ कर्म की आवश्यकता नहीं है। इसलिए यह अकर्मक क्रिया कहलाती है। हँसना, जागना, सोना, तैरना, डूबना, नहाना, चलना, बढना, जाना आदि अकर्मक क्रियाएँ है।

अपूर्ण अकर्मक क्रिया – जिस अकर्मक क्रिया का अर्थ एक कर्ता के आने पर भी पूरा नहीं होता उसे अपूर्ण अकर्मक क्रिया कहते हैं। अर्थ को पूरा करने के लिए किसी अन्य शब्द को जोड़ना आवश्यक होता है।

उदाहरणार्थ – रावण था।

इस वाक्य में कर्म नहीं है, केवल कर्ता और क्रिया है। अतः यहाँ वाक्य का अर्थ पूरा नहीं होता। 'था' क्रिया अपूर्ण अकर्मक क्रिया है। अतः 'था' से पहले कोई अन्य शब्द जोड़ने से पूरा अर्थ समझ में आ सकता है।

जैसे – रावण राक्षस था।

यहाँ रावण और राक्षस दोनों कर्ता है। फिर राक्षस शब्द (कर्तृपूरक) कर्तापूरक है। था,थी, थे, हूँ, चाहिए, होना, चाहना आदि अकर्मक क्रियाएँ है।

अपूर्ण अकर्मक क्रिया को सहायक क्रिया भी कहते हैं क्योंकि वह काल बनाने की क्रिया की सहायता करते हैं।

बनावट / रचना के आधारपर

रचना की दृष्टि से क्रिया दो प्रकार की होती है।

1] मूल या मुख्य क्रिया 2] यौगिक क्रिया

1) **मूल या मुख्य क्रिया :: –** वाक्य में जो क्रिया सर्वप्रथम आती है और अपना स्वतंत्र अर्थ व्यक्त करती है उसे मूल या मुख्य क्रिया कहते हैं और मुख्य क्रिया के बाद आने वाली क्रियाएं सहायक क्रिया कहलाती है' जैसे – वह पढ़ता है, सोहन गया है, वह आता है, वह खा रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में पढता, गया, आता, खा मूल् या मुख्य क्रिया है और इन क्रियाओं के बाद आने वाली क्रियाएं -- है, है, है, रहे हैं सहायक क्रिया है। जो क्रिया मुख्य क्रिया की सहायक होती है वह सहायक क्रिया कहीं जाती है।

2) **यौगिक क्रिया : --** जो क्रियाएँ दो क्रियाओं के योग से बनती हैं वह यौगिक क्रिया कहलाती है। इन दोनों क्रियाओं का अपना स्वतंत्र अर्थ होता है और ये दो मुख्य क्रिया के रूप में कार्य करते हैं।
जैसे – राम पुस्तक ले आया।
तुम मेरी पुस्तक ढूंढ निकालना।
उपर्युक्त वाक्यों में से 'ले आया', 'ढूंढ निकालना' यौगिक क्रियाएँ है। इन में प्रयुक्त दोनों क्रियाओं का अपना स्वतंत्र अर्थ है।

यौगिक क्रिया के अंतर्गत निम्नलिखित क्रियाएँ आती है —

संयुक्त क्रिया -- जो क्रिया दो या अधिक मूल धातुओं से बनती है उसे संयुक्त क्रिया कहते है।
जैसे- मीरा गीत गाने लगी है। 'गा', 'लग', 'है' ये तीन संयुक्त क्रियाएँ है।
संयुक्त क्रिया के दो अंग है –

1) प्रधान क्रिया – जो मुख्य अर्थ का बोध कराती है। जैसे – 'गा' प्रधान क्रिया।
2) गौण क्रिया – अर्थात द्वितीय क्रिया। जो प्रधान क्रिया कि सहायक होती है। जैसे – 'लगी' क्रिया। अधिकतर जाना, लेना, देना, पड़ना, आदि रूपों से होती है।

सहायक क्रिया – मुख्य क्रिया की सहायता करने वाली क्रिया को सहायक क्रिया कहते हैं। - जैसे- है, था, थी, थे।
उदा – सोफिया खाना खा रही है। (सहायक क्रिया- है)
नीता पढती है। (सहायक क्रिया - है)

प्रेरणार्थक क्रिया : –

जिस क्रिया से यह पता चलता है कि कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है तो उस क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। 'बच्चा दूध पिता है।' इसमें 'पी' धातु से बननेवाले क्रिया 'पिता' किसी दूसरे की प्रेरणा से पूर्ण नहीं हो रहा है। बच्चा दूध को स्वयं पिता है। इसलिए 'पी' धातु प्रेरणार्थक नहीं है और ना ही इससे बननेवाली क्रिया 'पिता' प्रेरणार्थक है। प्रेरणार्थक क्रिया निम्न उदाहरणों से आसानी से समझी जा सकती है –
जैसे –

अ	ब
सोहम सोता है।	माँ सोहम को सुलाती है।
बच्चा दूध पिता है।	मां बच्चे को दूध पिलाती है।

उपर्युक्त वाक्यों में ' अ' विभाग की क्रिया सामान्य क्रियाएँ हैं और 'ब' विभाग की क्रियाएँ किसी न किसी प्रकार की प्रेरणा से बनी है। इसलिए इस प्रकार की क्रियाओं को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

प्रेरणार्थक क्रिया दो प्रकार की होती है--

1] प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया --

2] द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया –

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया – प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया वह होती है जिसमें कर्ता स्वयं कार्य न करके दूसरों को कार्य करने की प्रेरणा देता है।

जैसे – मां बच्चे को दूध पिलाती है।
राम रमेश को पाठ पढ़ाता है।

इसमें मूलधारा के अंत में 'आना' प्रत्यय लगता है।

द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया – द्वितीय प्रेरणार्थक में कर्ता न स्वयं कार्य करता है न दूसरा कार्य करता है। यहाँ किसी अन्य को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है तो उसे द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

उदा – माँ दायीं से बच्चे को दूध पिलवाती है।
राम लक्ष्मण से पत्र लिखवाते है।

इसमें मूलधारा के अंत में 'वाना' प्रत्यय लगता है।

कुछ उदाहरण निम्नानुसार है —

सामान्य क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
उड़ना	उड़ाना	उड़वाना
नाचना	नचाना	नचवाना
हँसना	हँसाना	हँसवाना

विशेष – 1) प्रेरणा देनेवाले प्रेरक को कर्ता कहते है। इसे प्रेरक कर्ता माना जाता है।
2) जिसे प्रेरणा दी जाती है। उसे प्रेरित कर्ता कहते है।
3) प्रेरणार्थक क्रिया सकर्मक होती है।

नामधातुक क्रिया -- साधारणतः सभी क्रियाएं किसी न किसी धातु से बनती है लेकिन जब कोई क्रिया नाम/संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण से बनती है तो उसे नामधातुक क्रिया कहते हैं। हिंदी में ऐसी धातुएं बनाने के लिए 'आ', 'इया,' तथा शून्य प्रत्ययों का प्रयोग होता है।

उदा– अपनी - अपनाना ('आ' प्रत्यय)
चमक - चमकना ('आ' प्रत्यय)
हाथ – हथियाना ('इया' प्रत्यय)
स्वीकार (शून्य प्रत्यय)
बदल (शून्य प्रत्यय)

पूर्वकालिक क्रिया–

जब कर्ता एक क्रिया को समाप्त कर उसी क्षण कोई दूसरी क्रिया आरंभ करता है तो पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। दूसरे शब्दों में " किसी क्रिया का पूर्ण होना किसी दूसरी क्रिया के पूर्ण होने के पूर्व पाया जाता है उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते है – जैसे सोकर, खाकर, पीकर, आकर, जाकर आदि

उदा- मैं खाना खाकर सो गई।
मैं पुस्तक पढ़कर घूमने गई।
ओम नहा कर पढ़ने बैठा।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रिया के पूर्व अन्य क्रिया का होना पाया जाता है। इन वाक्यों में खाकर, पढ़कर, नहाकर पूर्वकालिक क्रियाएँ है ।

व्यवहार/अर्थ के आधारपर क्रिया के भेद

जिस क्रिया से कार्य व्यापार करने की अलग-अलग रीति या ढंग या तरीके का पता चलता है। उसे क्रिया का अर्थ कहते है। इसके निम्न लिखित भेद है —

1) विधानार्थक वाक्य – जिस वाक्य में क्रिया के होने या करने की सूचना हो उसे विधनार्थक वाक्य कहते हैं।

उदाहरणार्थ – यहाँ बारिश अच्छी है।
                    उसने पत्र लिखा।

2) निषेधार्थक वाक्य – जिस वाक्य में किसी बात के ना होने या न करने का बोध होता है उसे निषेधार्थक वाक्य कहते हैं।
उदा – राजा अपनी प्रतिज्ञा न भूलेगा।
          सीता खाना नहीं खाएगी।

3) प्रश्नार्थक वाक्य – जिस वाक्य में किसी प्रकार का प्रश्न किया गया हो उसे प्रश्नार्थक वाक्य कहते हैं।
उदा – क्या पिताजी आ गए?
            तुम कहाँ रहती हो?

4) आज्ञार्थक वाक्य – जिस वाक्य में किसी प्रकार की आज्ञा, आदेश का बोध होता है उसे अज्ञार्थक वाक्य कहते हैं।
उदा – तुम बाजार जाओ।
          देशभक्त बनो।
          तुम पुस्तक पढ़ो।

5) संदेहार्थक वाक्य – जिस वाक्य में संदेह या शंका का बोध होता है उसे संदेहार्थक वाक्य कहते हैं।
उदा – शायद कल बारिश होगी।
            मोहन स्कूल गया होगा।

6) विस्मयार्थक वाक्य – जिस वाक्य में हर्ष, शोक, घृणा, विस्मय आदि का बोध हो उसे विस्मयार्थक वाक्य कहते हैं।
उदा – वाह! कितना सुंदर दृश्य है।
          अरे ! तूने यह क्या किया।

7) इच्छार्थक वाक्य – जिस वाक्य में इच्छा, कामना, आशिर्वाद आदि का बोध हो उसे इच्छार्थक वाक्य कहते हैं।
उदा – ईश्वर तुम्हें सद्बुद्धि दे।
          आप सभी खुश रहो।

8) संकेतार्थक वाक्य – दो वाक्यों की क्रियाएं जब एक दूसरे की ओर संकेत करती है तब वह संकेतार्थक वाक्य कहलाता है।
उदा – अगर भूख होती तो मैं और खाना खाता।
          पैसे होते तो मैं और किताबें खरीदता।

9) अनिश्चयार्थक / संभावनार्थक वाक्य – क्रिया का वह रूप जो संभावना, अनुमान, या अनिश्चितता आदि का अर्थ व्यक्त करता हो वह संभवनार्थक वाक्य कहलाता है।
उदा – शायद आज गाड़ी देर से आएगी।
          अगले 24 घंटों में वर्षा होगी।

काल के अनुसार क्रिया के भेद

भूतकालिक क्रिया -- राधा ने आम खाया था।
वर्तमानकालिक क्रिया -- राधा आम खा रही है।
भविष्यकालिक क्रिया -- राधा आम खाएगी।
भूतकाल में कार्य संपन्न होने का बोध होता है उन्हें भूतकालिन क्रिया कहते हैं।
वर्तमान में कार्य संपन्न होने का बोध या चलने का बोध होता है उसे वर्तमानकालीन क्रिया कहते है।
भविष्य में होनेवाले कार्य का बोध कराती है उसे भविष्य भविष्यकालिक क्रिया कहते है।

क्रियाओं का परिवर्तन / रूपांतरण (आधार)

क्रियाओं के रूपांतर के आधार छः प्रकार से होते है।

- वचन
- लिंग
- पुरुष
- काल
- वाच्य
- कारक

वचन के अनुसार क्रिया का रूपांतर : –

एकवचनी क्रियाएँ : –

1) एकवचनी क्रियाएँ पुल्लिंग होने पर 'आ' कारांत होती है। - उदाहरणार्थ – पढ़ता, पढा, पढेगा, पढ़ रहा होगा, पढ़ रहा था।

2) एकवचन क्रियाएं स्त्रीलिंग होने पर 'ई' कारांत होती है। उदाहरणार्थ -- पढ़ती, पढी, पढेगी, पढ रही होगी, पढ़ रही थी।

बहुवचनी क्रियाएँ :--

3) बहुवचन क्रियाएँ पुल्लिंग होने पर 'ए' कारांत होती है। जैसे – पढ़ते, पढ़ें, पढ़ेंगे, पढ़ रहे होंगे, पढ़ रहे थे।

4) बहुवचन क्रियाएँ स्त्रीलिंग होने पर 'ई' कारांत होती है। जैसे – पढ़ती, पढी, पढेगी, पढ़ रही होगी, पढ़ रही थी।

अकर्मक क्रिया का रूपांतर : –

5) अकर्मक क्रिया का रूप क्रिया के कर्ता के वचन के अनुसार बदलता है। जैसे –

काल	एकवचन	बहुवचन
भूतकाल-	वह हँसता था।	वे हँसते थे।
वर्तमान-	वह हँसता है।	वे हँसते हैं।
भविष्य-	वह हँसेगा।	वे हँसेंगे।

यहाँ कर्ता के वचन के अनुसार क्रिया में विकार हुआ है।

सकर्मक क्रिया का रूपांतर : –

6) सकर्मक क्रिया का रूप भी क्रिया के कर्ता के अनुसार बदलता है परंतु भूतकाल में कर्म के वचन के अनुसार बदलता है। जैसे – उसने पुस्तक पढ़ी
उसने पुस्तकें पढी।

काल के अनुसार क्रिया में रूपांतर : –

भूतकाल काल --

सामान्य – मीरा ने आम खाया।
अपूर्ण – मीरा आम खा रही थी।
पूर्ण – मीरा ने आम खाया था।

वर्तमान काल –

सामान्य – मीरा आम खाती है।
अपूर्ण – मीरा आम खा रही है।
पूर्ण – मीरा ने आम खाया है।

भविष्य काल –

सामान्य – मीरा आम खाएगी।
अपूर्ण – मीरा आम खा रही होगी।
पूर्ण – मीरा ने आम खाया होगा।

➢ पुरुष के अनुसार क्रिया का रूपांतर : –

काल	वचन	उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	अन्य पुरुष
भूतकाल काल	एकवचन	मै था	तू था	वह था
वर्तमान काल		मै हूँ	तू है	वह है
भविष्य काल		मै हूँगा	तू होगा	वह होगा
भूतकाल काल	बहुवचन	हम थे	तुम थे	वे थे
वर्तमान काल		हम है	तुम हो	वे है
भविष्य काल		हम होंगे	तुम होंगे	वे होंगे

➢ लिंग केअनुसार क्रिया का रूपांतर : –

स्त्रिलिंगी क्रियाएँ : – इस क्रिया के अंत में 'ई' लगता है। स्त्रीलिंग क्रियाएँ एकवचन में 'ई' कारांत होती है। जैसे – पढ़ती, पढेगी, पढ़ रही होगी।

स्त्रीलिंग क्रिया बहुवचन में 'ई' कारांत होती है। जैसे – पढती, पढी, पढ रही होंगी।

पुल्लिंग क्रियाएँ : – पुल्लिंग क्रियाएँ एकवचन में 'आ' कारांत होती है। जैसे – पढ़ता, पढ़ेगा, पढ़ा,पढ़ रहा होगा।

पुल्लिंग क्रिया के बहुवचन का अंत 'ए' कारांत होती है। जैसे – पढ़ते, पढ़ेंगे, पढ़ रहे होंगे, पढ़ रहे थे।

उभयलिंगी क्रियाएँ : – ये क्रियाएँ स्त्रीलिंग और पुल्लिंग में समान रूप से आती है। जैसे – है, हो, हूँ ।

➢ कारक के अनुसार क्रिया का रूपांतर :--

कर्ताकारक के अनुसार रूपांतर – जब कर्ता के साथ 'ने' प्रत्यय नहीं होता तब कर्ता के अनुसार ही क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष होते हैं।

जैसे – वह पुस्तक पढ़ता है। (एकवचन)

वह पुस्तक पढ़ते हैं। (बहुवचन)

सीता पुस्तक पढ़ती है । (स्त्रीलिंग)

जब कर्ता के साथ कारक चिहन हो तो कर्म के अनुसार क्रिया के वचन और लिंग होते हैं।

कर्म के अनुसार परिवर्तन –

बहुवचन – राम ने पुस्तकें पढ़ी।

राम ने पुस्तक पढ़ी।

यह कर्म के वचनानुसार क्रिया में परिवर्तन दिखाई देता है।

कर्म के लिंग के अनुसार परिवर्तन –

उदा. – राम ने पुस्तक पढ़ी।

राम ने ग्रंथ पढा।

यहाँ 'पुस्तक' कर्म का लिंग स्त्रीलिंग है, इसलिए क्रिया पढी स्त्रीलिंग बन गई और' ग्रंथ' यह कर्म पुल्लिंग है इसलिए क्रिया पढा पुल्लिंग है।
जब कर्ता का चिन्ह 'ने' और कर्म का चिन्ह 'को' दोनों होते हैं तब क्रिया सदैव एकवचन और पुल्लिंग में ही होती है।
उदाहरणार्थ – मीरा ने आम खाया। (एकवचन)
मीरा ने आम को खाया। (बहुवचन)
मैंने आम को खाया। (उत्तम पुरुष)
तुमने आम को खाया। (मध्यम पुरुष)
उसने आम को खाया। (अन्य पुरुष)

➢ वाच्य

वाच्य शब्द का अर्थ है 'बोलने का विषय।' क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो जाता है कि क्रिया का विषय कर्ता है, कर्म है या भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।

दूसरे शब्दों में क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसके प्रयोग का आधार कर्ता, कर्म या भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।

वाच्य के भेद :--

वाच्य के तीन भेद माने जाते हैं -

1. कर्तृवाच्य
2. कर्मवाच्य
3. भाववाच्य

1] कर्तृवाच्य >-- इसमें कर्ता प्रमुख होता है। क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो जाता है कि वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्ता है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।

उदाहरण - राम पुस्तक पढ़ता है।
सीता पूजा करती है।

विशेष- 1] कर्तावाच्य में कर्ता प्रधान होता है।
2] कर्तावाच्य में क्रिया का सीधा संबंध मुख्य कर्ता से होता है।
3] कर्तावाच्य में क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष कर्ता के अनुसार होते हैं।
4] इसमें अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाएँ होती है।

2] कर्मवाच्य >-- इसमें कर्म प्रमुख होता है। क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो जाता है कि वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्म है, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।

उदाहरण - पुस्तक राम द्वारा पढी जाती है।
पूजा सीता द्वारा की जाती है।

विशेष - 1] कर्मवाच्य में कर्म प्रधान होता है।

2] इसमें क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष कर्म के अनुसार होते हैं,

3] यह केवल सकर्मक क्रियाओं से बनती है।

3] भाववाच्य >-- इसमें ना कर्ता प्रमुख होता है ना कर्म। इसमें तो भाव महत्वपूर्ण होता है। क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो जाता है कि वाक्य का उद्देश्य न कर्ता है न कर्म बल्कि भाव है, उसे भाववाच्य कहते हैं।

उदाहरण - राम से पुस्तक पढ़ी नहीं जाती।

सीता से खाना नहीं खाया जाता।

विशेष - 1] भाववाच्य में न कर्ता होता है ना कर्म।

2] यह विशेष रूप से अकर्मक क्रियाओं से बनती है।

3] भाववाच्य में क्रियाएँ सदा पुल्लिंग, एकवचन तथा अन्य पुरुष की होती है।

संदर्भ – 1] कामता प्रसाद गुरु, हिंदी व्याकरण, नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी।

2] भोलानाथ तिवारी, हिंदी भाषा, किताब महल, इलाहाबाद, संस्करण 2002

3] अंबादास देशमुख, भाषा विज्ञान के अधुनातन आयाम, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2007

4] प्रा. प्राची, भाषा विज्ञान, हिंदी भाषा और हिंदी व्याकरण, प्राची प्रकाशन मुंबई, प्रथम संस्करण, 2008